❁ 13 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

❁ ज्ञान-

1] एक होती है अव्यभिचारी याद, दूसरी है व्यभिचारी याद। अव्यभिचारी याद अथवा अव्यभिचारी भक्ति जब पहले शूरू होती है सब शिव की पूजा करते हैं।

2] देवता से मनुष्य बनने में तुम बच्चों को 84 जन्म लगे है। और मनुष्य से देवता बनने में एक सेकण्ड लगता है।

3] मुख्य हैं ही दो बातें– अल्फ और बे, बाप और बादशाही। बाप आकर बादशाही देते हैं और बादशाही के लिए पढ़ाते हैं। इसलिए इसको पाठशाला भी कहा जाता है।

4] बाप कहते हैं मैं वृक्षपति ऊपर में निवास करता हूँ। जब झाड़ एकदम जड़जड़ीभूत हो जाता है, तब मैं आता हूँ देवता धर्म स्थापन करने।

5] तुम मूलवतन निवासी थे। यहाँ पार्ट बजाने आये हो। तुम बच्चे आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले हो। इसलिए 84 जन्म हैं मैक्सीमम। फिर मिनिमम एक जन्म।

6] बाप आकर तुम बच्चों को समझाते हैं– 84 जन्म तुम लेते हो। पहले-पहले मेरे से तुम बिछुड़ते हो। सतयुगी देवतायें ही पहले होते हैं। जब वह आत्मायें यहाँ पार्ट बजाती हैं तो बाकी सब आत्मायें कहाँ चली जाती हैं? यह भी तुम जानते हो– बाकी सब आत्मायें शान्तिधाम में होती हैं। तो शान्तिधाम अगल हुआ ना। बाकी दुनिया तो यही है। पार्ट यहाँ बजाते हैं। नई दुनिया में सुख का पार्ट, पुरानी दुनिया में दु:ख का पार्ट बजाना पड़ता है। सुख और दु:ख का यह खेल है। वह है रामराज्य। दुनिया में कोई भी मनुष्य यह नहीं जानते कि सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। न रचयिता को, न रचना के आदि, मध्य, अन्त को जानते हैं।

7] बाप समझाते हैं 1250 वर्ष का एक युग होता है। 84 जन्मों का भी हिसाब चाहिए ना। सीढ़ी का भी हिसाब चाहिए ना– हम कैसे उतरते हैं। पहले-पहले फाउन्डेशन में हैं देवी-देवता। उनके बाद फिर आते हैं इस्लामी, बौद्धी। बाप ने झाड़ का राज़ भी बताया है। बाप के सिवाए तो कोई सिखला न सके।

❁ योग-

1] योग सिखाते हैं कि एक की याद में रहो। वह खुद कहते हैं– हे आत्माओं, हे बच्चे, देह के सब सम्बन्ध छोड़ो, अब वापिस जाना है।

❁ धारणा-

1] शरीर सहित जो कुछ भी देखने में आता है, यह सब विनाश होना है, तुम आत्माओं को अब घर लौटना है इसलिए पुरानी दुनिया को भूल जाओ।

2] सभी को जीयदान देता है, मनुष्य से देवता बनाने की सेवा करनी है। बेहद के बाप से पढ़कर दूसरों को पढ़ाना है। देवी गुण धारण करने और कराने है।

❁ सेवा-

1] सभी को सुनाओ कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया है। अब हद के वर्से का समय पूरा हुआ अर्थात् भक्ति पूरी हुई। अब रावण राज्य समाप्त होता है। बाप आया है तुम्हें रावण 5 विकारों की जेल से छुड़ाने। यह पुरूषोत्तम संगमयुग है, इसमें तुम्हें पुरूषार्थ कर दैवी गुणों वाला बनना है। सिर्फ पुरूषोत्तम संगमयुग को भी समझ लें तो स्थिति श्रेष्ठ बन सकती है।

2] तुम बच्चे पढ़ रहे हो औरों को भी पढ़ाते हो। सिर्फ बाप का ही मैसेज देना है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं। अब हद का वर्सा पूरा होता है।